E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 142-144
Received: 22-05-2019
Accepted: 25-06-2019

डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक
हिंदी अध्यापक, ज0 न0 वि0,
सीतामढ़ी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक
हिंदी अध्यापक, ज0 न0 वि0,
सीतामढ़ी, बिहार, भारत

कथाकार रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की नारी–संवेदना

डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक

सारांश
इतिहास पर व्यंग्य करते हुए 'दिनकर' जी ने लिखा था –

''अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी है जिनकी महिमा का,
चन्द्र भूगोल खगोल''।

वास्तव में इतिहास तो वैसे लोगों को याद करता है जिनके पास चमक होती है। रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' इन चमक दमक से आजीवन परे रहे। उन्होंने एकांत साहित्य साधना की। नाम भी कमाया। पर शायदय युग धर्म का निर्वाह नहीं कर पाये। वे राजनेताओं और समीक्षकों के मुखापेक्षी नहीं रहे। बावजूद इसके उनकी रचनाओं में जो दम है, वह उन्हें दीर्घकाल तक साहित्य में टिकाये रखेगा।
'अंचल' का कथा–साहित्य एक करुणावादी कवि के यथार्थ की अभिव्यक्ति है। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ 'तारा' नामक कहानी–संग्रह में संगृहीत है। उनके कथा–साहित्य में रोमांटिक अनुभूतियाँ ही मुखर है। सन् 1935 में बी.ए. पास होने के बाद 1937 में उनकी 'तारा' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। इन्होंने 1942ई. में एम. ए. पास किया। 1945 ई. में इनका पहला उपन्यास 'चढ़ती धूप' प्रकाशित हुआ। 1946ई. में दूसरा उपन्यास 'नयी इमारत' और 1947 ई. में हिंदी प्रचारक संस्थान से तीसरा उपन्यास 'उल्का' प्रकाशित हुआ। 1951 ई. में 'मरूदीप' जिसका नामकरण बाद में 'रेत की हिरणी' कर दिया गया, प्रकाशित हुआ। उपन्यासों के अतिरिक्त 'तारा', 'ये वे बहुतेरे', 'कुँवर की दुलहन', 'मलंग बुआ', 'मरूस्थल एवं अन्य कहानियाँ', 'देहगाथा', 'क्षितिज बिम्ब' आदि कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए।
'अंचल' की कथा–साहित्य का मूल स्वर नारी संवेदना है। मानव जीवन 'काम' प्रधान होता है। इसे लेकर जीवन में जहाँ सुख का प्रादुर्भाव होता है वहीं यह अनेक विडम्बनाओं को भी जन्म देता है। वैदिक काल में नारी को समाज में यथेष्ट सम्मान प्राप्त था। किन्तु कालान्तर में समाज पर पुरुषों का शिकंजा कसता गया और नारी के अधिकारों में कटौती होती गई। मध्यकाल में आकर नारी भोग्या–मात्र बनकर रह गई। नारी अपने सारे संबंधों में आजीवन पुरुषों के अधीन रहती है और पुरुष की स्वार्थपरता एवं भोगवादी दृष्टि के कारण उसके हाथों लीला–कमल बनकर रह जाती है। 'अंचल' की नारियाँ भी ऐसी ही प्रतीत होती हैं।

प्रस्तावना
'अंचल' जी ने अपने कथा–साहित्य में नारी संवंदना से संपृक्त विभिन्न पहलुओं को बड़ी ईमानदारी से उभारा है। इनकी नारियाँ असफल प्रेम, अतृप्त वासना और उत्पन्न परिस्थिति को ईमानदारी से जीती है। 'अंचल' के कथा साहित्य में नारी पात्रों की आत्म–हत्या की प्रवृति, अतृप्त वासना और अतृप्त प्रेम का ही उपज है। कभी–कभी उनकी नारियाँ वासना की अतिरेक के कारण नारी सुलभ गुणों का परित्याग कर अनैतिक मार्ग अपना लेती है। रूपा, जुलेखा, चम्पा, अलका आदि ऐसी ही उनकी नायिकाएँ है। चम्पा तो किसी पुरुष को 'ना' करना जानती ही नहीं। उनकी अधिकांश पात्राओं का आदर्श, जैनेन्द्र के 'त्याग पत्र' की मृणाल है, जो किसी पुरुष को 'ना' नहीं कहती है।
'क्षितिज बिम्ब' कहानी संकलन के अधिकांश नारी पात्र नारी के मूक और बलिदान से पूर्ण 'प्रेम' को जीना चाहती है। 'आषाढ़ की वह आततायी रात' की बहु वैधव्य की विडम्बनाओं को झेलती हुई भी देह की माँग को अनसुनी नहीं कर पाती है। वह पता नहीं कैसे गर्भवती हो जाती है? रूढ़िग्रस्त और अंधी परम्परावादी यह समाज उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता है और एक रात परिवार के लोग उसका गला दबा देते हैं। इस घटना को संवेदना के स्तर पर देखा जा सकता है। 'लंगड़ी कामना' की कृष्णा बुआ के साथ किस पाठक की सहानुभूति नहीं होगी। कृष्णा बुआ ने अपने जीवन के प्रथम प्रहार में ही अपने सूर्य का अस्त देखा है। वैधव्य की ज्वाला में जलना उसकी नियति बन गयी। सहानुभूति प्रेम की पहली सीढ़ी है। गाँव के 'पोस्ट मास्टर' के साथ उसकी पहली सहानुभूति जगी थी। यह सहानुभूति उसका आंतरिक प्रेम बनकर फुटी। पोस्टमास्टर के सम्पर्क और सान्निध्य ने उसके मन की मरूभूमि में नयी आशाओं के निखिलिस्तान को जन्म दिया। किन्तु अंततः उसे इस मधुर स्वप्न को भूल जाना पड़ा।

'आत्मा की लाश' की मामी भी एक ऐसी ही अभिशप्त पात्रा है, जिसका पति भरी–जवानी में क्षयग्रस्त हो गया था। मणि मामा प्रतिक्षण अपने जीवन के करीब होते अंत का एहसास कर रहे थे। किन्तु इससे बेखबर उनकी पत्नी अपनी दुनिया में मस्त थी। उनके रिश्ते का भाई चन्दर मामा अक्सर ही उनके घर आया करते थे। मामी और चन्दर मामा में गहरी छनती थी। दुनिया की नजर में यह संबंध भले ही अनैतिक हो, किन्तु देह के स्तर पर यह सर्वथा उचित था। किन्तु इस संदर्भ में यह द्रष्टव्य है कि इस संग्रह की कोई भी नारी पात्रा सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती।

'मेरी पहली भौजी' की पात्रा अपने नपुंसक पति को झुठलाती हुई उसी गाँव के श्याम ठाकुर से जुड़ जाती है। वह उसकी गोद में अपना सर्वस्व समर्पण कर देती है। किन्तु उसे जब मालूम होता है कि श्याम ठाकुर हत्या और डकैती का अभियुक्त है, तो वह उसे तुरंत दुत्कार देती है। यहीं नहीं, अपनी कोख में साँसे ले रही नन्हीं जात को भी वह खत्म कर देती है। मगर अपने प्रेम को लांछित नहीं करती। यह कहा जा सकता है कि 'अंचल' की नारियाँ देहभोग के नाम पर उच्छृंखल प्रेम का आदर्श नहीं थोपती।

'चढ़ती धूप' की नायिका ममता अपने प्रेमी मोहन को तन–मन से प्यार करती है। वह अपने आदर्शो के कारण उसका त्याग कर देश की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने लगता है। वहाँ तारा नाम की स्त्री से उसकी घनिष्ठता बढ़ जाती है। इस पर भी ममता मोहन के विरूद्ध कुछ भी सुनने को तैयार नहीं है। वास्तव में नारी के प्रति 'अंचल' जी को असीम श्रद्धा है। एक जगह वे स्वीकार करते हैं, 'प्रेम कोई फैशन की वस्तु नहीं, जो पाँच–दस वर्ष पर बदलता रहे। वह एक सार्वभौमिक लोकोत्तर प्रसरणशीलता है। इसी को लेकर भारतीय नारी का वैभव बोध चलता है। बड़े–बड़े अभावों और दाहों के बीच अपने को वह अपराजेय और अविजित पाती है, यही उसकी शक्ति की ज्वाला है।''

'लंगड़ी कामना' कहानी की लंगड़ी बुआ विधवा हैं किन्तु उनकी कामना बूढ़ी नहीं हुई है। स्त्री के एकनिष्ठता से जीवित पुरुष को संतोष और पुरुषत्व के अहं की विशिष्ट पूर्ति मिलती ही है, मरने के बाद भी यह निष्ठता कायम रहे– शायद इसीलिए वैधव्य की शुचिता का आविष्कार हुआ होगा। नर के मरणोपरान्त भी उसके प्रति नारी की आसक्ति, प्यार और समर्पण की गहराई इसी आवेगहीन काम, निस्पृह, एकाग्र, तल्लीन आराधना से आँकी जाती है। जीवन की सारी सरलता और तरलता को सोखकर घने–घने अंधकार में वह रात की जलहीन नदी बन जाए, जिसमें दर्द की कोई लहर कभी उठती ही नहीं। अपने ही पीछे यंत्रवत लगी रहकर वह दूसरे की छाया से भी कतराती रहे। उसके बारे में अंग फीके पड़ जाएँ। किसी की चाह–भरी धूप की प्रश्नवाचक रेखा खींचती कोई किरण उसके तन मन में न उभरे। केवल जीते रहने के लिए आत्मवर्जक की कितनी यंत्रणा भोगनी पड़ती है, इसे विधवा ही जानती है। मरकर पुरुष नारी को जो पुण्य–लोभी वैधव्य पहना जाता है, वह एकनिष्ठता के कंकाल की तरह उसका पीछा किया करता है।

विधवा हो जाने पर सिंदूर की जलन फिर नहीं जुड़ती। नारी–जीवन की सार्थकता और कृतार्थता का जलता हुआ अंगारा सदा के लिए बुझकर राख बन जाता है–आँसुओं से तरबतर भींगी राख, जो दिनों के बीतने के साथ, पत्थर की तरह और भारी होती जाती है। पति तूफान की तरह सदा के लिए अंतरिक्ष में विलीन हो जाता है, पर प्राण जिसमें साँस लेकर जीता है? ऐसी ऑक्सीजन की तरह विधवा उन सारे विनाशक तहस–नहस को झेलती टूटते दम तक अटकी रह जाती है। अपने जीवित अंग को काटकर फेंक देने की विकलांगता को अपनी नियति माने, वह अपने पाने का शून्य सहेजती जाती है। पीढ़ियों से चले आए पुण्य को, मर्यादा के सत को अपनी नस–नस में रमाए वह न अपनी हो पाती है न पराई। पर जिस बंधन में वह अकेली छटपटाती है, उसकी रक्षा के लिए हर प्रकार के आवेग और आवेश से जूझने का उसका संकल्प कभी–कभी निभ भी नहीं पाता।

शोध–आलेख–प्रयोजन

'अंचल' जी ने अपने नारी–पात्रों की सृष्टि, 'काम–चिंतन' को केन्द्र में रखकर की है। यही प्रवृत्ति 'अंचल' जी के समकालीन कहानीकारों में भी दृष्टिगत होती है। इसे मनोवैज्ञानिक कहानी की भी संज्ञा दी जा सकती है। फ्रायड ने मानव के सभी व्यापारों को यौन से उत्प्रेरित माना था। वास्तव में हम इसे पूर्णतः नकार भी नहीं सकते। 'अंचल' जी भी इस प्रभाव को अपने ऊपर स्वीकारते हैं। उन्होंने लिखा भी है:'' हिंदी कहानी में नये–नये संवेदन तत्व आए हैं, पर कथा लेखन को सभी संभाव्य यौन व्यापारों का परीक्षण–क्षेत्र बनाने की प्रवृति भी पनपी है। यौन मानसिकता मानव की आविभाज्य विवशता के साथ संवरणशीलता भी है, इसे न मानना एकांगी दृष्टिकोण है। जीवन में अविचार और असद् के साथ संयम और संस्कारशील सद् भी हैं, इसे न भुला देना है। जीवन और जगत् की पूरी पारदर्शी प्रामाणिकता में यह बाधक बनता है। इसमें संदेह नहीं कि मेरा प्रयत्न रहा था कि स्त्री पुरुषों के आकर्षणों की यह कहानी झूठी नैतिकता और दम तोड़ती संस्कारशीलता पर कठोर प्रहार करे। नर–नारी का संबंध यों ही सबसे जटिल है। विवाह की प्रथा और पतिव्रत के पालन की बाध्यता ने उसे और न जाने कितनी तरह की पेचिदगियों से भर दिया है।'' कदाचित 'अंचल' की नारियाँ इसलिए अपने को उर्ध्वमार्ग पर गतिशील रख पाती हैं। 'अंचल' के कथा–साहित्य की नारियाँ एक ऐसी निर्लिप्ता की ओर इशारा करती है, जो बड़े से बड़े भोग में भी अभोग और अवांछनीयता को सहजता के साथ साधे दिखाई पड़ती हैं। इनमें जीवन–धर्मी आस्था की अर्न्तमुखी दीप सदैव दीप्त है। आज इस अन्तर्मुखी दीप की आवष्यकता हमारे समाज को है। 'अंचल' की नारियाँ अपनी संवेदनाओं से आज की नारियों को एक सबलता प्रदान करती हैं।

उपसंहार

भारतीय नारी की दैन्यता, असहायता और सहनशीलता अंचल के कथा–साहित्य का मुख्य विषय रहा है। नारी सौन्दर्य और उसके प्रति आसक्ति 'अंचल' जी की सबसे बड़ी कमजोरी रही है। 'चढ़ती धूप' की ममता, और तारा, उल्का उपन्यास की मंजरी सभी में प्रेम के प्रति ऊँची भावनाएँ है। 'अंचल' जी ने सामाजिक विषमताओं के बीच ऐसी नारियों की कल्पना की है, जो समाज में आगे बढ़कर अपने मन की बात कह और कर सके। ममता ऐसी ही नारी पात्र है, जो विवाहित जीवन में भी, न केवल प्रेमी की महत्ता को स्वीकार करती है, बल्कि उसके लिए अपने पति पर व्यंग्यों की वर्षा भी करती है। उनके सभी नारी पात्र त्याग, प्रेम, ममता और सहनशीलता से ओत–प्रोत हैं।

'अंचल' की नारियों में यह भी विशेषता देखने को मिलती है कि वे प्रारंभ में सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करती हैं और अंत में समझौता कर नयी नारी का प्रतीक बन जाती है। 'अंचल' जी नारी स्वतंत्रता के समर्थक है। यही कारण है कि निरंतर दुःख और पीड़ा मिलने के बाद भी 'मंजरी' अपने देवतुल्य भाई के विरूद्ध हो जाती है, जब वह उसके पति पर प्रहार करता है। 'अचंल' जी का नारी के प्रति ऐसा उच्च दृष्टिकोण होने के कारण ही उनके नारी पात्र, पुरुष पात्रों से कहीं ज्यादा सबल है।

संदर्भ

1. 'सम्मेलन पत्रिका' डॉ. देवी प्रसाद कुँवर, पृ0–295
2. 'आधुनिक कवि'– रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–21
3. 'अंचल समग्र' प्रथम खण्ड–पृ0–756

4. 'लग्नभ्रष्टा' – रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–21
5. 'अनब्याही सती'– रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–48
6. लंगड़ी कामना– रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–56–57
7. 'सम्मेलन पत्रिका'– डॉ. विश्वभावन देवलिया, पृ0–293–94
8. आत्मा की लाश– रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–86–87
9. 'मेरी पहली भौजी' रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–14
10. अंचल समग्र' (प्रथम खण्ड) देवी प्रसाद कुँवर, पृ0–11
11. मरूदीप– रामेश्वर शुक्ल अंचल, पृ0–33